विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, के अष्टम दीक्षांत समारोह के अवसर पर माननीया राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का अभिभाषण

जोहार!

मंचस्थ गणमान्य अतिथियों, कुलपति प्रो० रमेश शरण, प्रतिकुलपति प्रो० कुनुल कंडीर, अभिषद्, अधिषद् व विद्वत परिषद् के सदस्यगण, शिक्षकगण, शिक्षकेतर कर्मीगण, प्रेस व मीडिया के प्रतिनिधिगण एवं आज के दीक्षांत समारोह के मुख्य आकर्षण के केन्द्र उपाधिधारकों!

विनोबा भावे विश्वविद्यालय के अष्टम दीक्षांत समारोह का साक्षी बनकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम मैं भू–दान यज्ञ के प्रणेता आचार्य विनाबा भावे को नमन व श्रद्धा–सुमन अर्पित करती हूँ जिनके नाम पर यह विश्वविद्यालय स्थापित है। मैं इस पावन क्षण पर उपाधिधारकों, उनके अभिभावकों तथा शिक्षकों को बधाई देती हूँ। भारतीय परिधान में दीक्षांत समारोह आयोजित किये जाने के लिए विश्वविद्यालय के सफल प्रयास व पहल की सराहना करती हूँ। आज के इस दीक्षांत समारोह में छात्राओं की संख्या को देखकर सुखद अनुभूति का एहसास कर रही हूँ। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मैं चाहती हूँ कि लड़कियाँ आगे रहे और लड़के पीछे? दोनों के मध्य स्वस्थ एवं बेहतर प्रतिस्पर्द्धा देखना चाहती हूँ। उपाधिधारकों में छात्राओं का प्रतिशत, विशेषकर पिछड़े वर्ग व अल्पसंख्यक समुदाय की लड़कियों की हिस्सेदारी देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हो रही है। इससे महिला सशक्तिकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

प्राकृतिक एवं खनिज संपदा से परिपूर्ण झारखण्ड राज्य में विकास की असीम संभावनायें हैं। इस प्रदेश की जीवंत कला–संस्कृति ने इसे अनुपम सौंदर्य और समृद्धता प्रदान की है। हमें अपनी बौद्धिक क्षमता व कुशलता से इसे और अधिक सुंदर व समृद्ध बनाना है क्योंकि बिना बौद्धिक संपदा के हम प्राकृतिक और खनिज संपदा का कुशलतापूर्वक समुचित उपयोग नहीं कर सकते। हमारे विश्वविद्यालय की भूमिका इस अर्थ में अहम है। प्रसन्नता है कि यह विश्वविद्यालय अपने को उत्कृष्ट विश्वविद्यालय के रुप में विकसित करने की दिशा में प्रयासरत है। मेरे निदेशानुसार, विश्वविद्यालय द्वारा छात्रहित में सत्र के नियमितीकरण, परीक्षा का समय पर संचालन तथा परीक्षाफल का समय पर प्रकाशन, विद्यार्थियों को अंक–पत्र सहित अन्य प्रमण–पत्र ससमय सुलभ कराने हेतु त्वरित कार्रवाई करते हुए विशेष ध्यान दिया जा रहा है। विद्यार्थियों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुलभ हो एवं उनमें प्रतियोगिता की भावना अधिक–से–अधिक विकसित हों तथा विश्वविद्यालय में शोध का स्तर और बेहतर बनाने हेतु भी प्रयास किया जा रहा है।

आज के प्रतियोगितात्मक दौर में विश्वविद्यालय के अन्दर गुणवत्तापूर्ण अध्ययन–अध्यापन व उत्कृष्टता की संस्कृति के परिवेश को स्थापित करना होगा। अध्ययन–अध्यापन की नवीनतम प्रवृत्तियों एवं विद्यार्थी के बदलते स्वरूप में भी सामंजस्य स्थापित करना होगा। शिक्षा के बदलते मानक आयामों के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। शिक्षा व उपाधि तब तक मूल्यहीन हैं, जब तक आपमें नैतिकता, मानवीयता, संवेदनशीलता एवं परोपकारी भाव उत्पन्न न हों। मुझे विश्वास है कि आप अर्जित ज्ञान, कौशल, विवेक एवं संस्कार का

प्रयोग समाज कल्याण के निमित्त करने का सदैव प्रयास करेंगे। इस विश्वविद्यालय की गौरवमयी परम्परा के आप ध्वजवाहक हैं। अपनी बुद्धि व तरक्की के साथ-साथ समाज के कमजोर तबकों की बेहतरी के लिए कुछ-न-कुछ करने की भावना सदैव बनाये रखेंगे। सर्वांगीण विकास के लिए ज्ञान ही नहीं अपितु ज्ञान का विवेकपूर्ण एवं सकारात्मक मनोभावों का होना अनिवार्य है। व्यवहार संबंधी शीलगुणों को पोषित करें। अपने अंदर के विद्यार्थी-भाव को सदा जीवन्त रखने के लिए सतत् भगीरथी प्रयास आपकी प्रगति में सहायक होगा। आप अपने जीवन के एक नये अध्याय में प्रवेश करने जा रहे हैं। आपसे उम्मीद करती हूँ कि भविष्य में देश व समाज के विकास में आप अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगे। आजीविका व स्वावलंबन महत्वपूर्ण है, किंतु राष्ट्रहित अति-महत्वपूर्ण है।

आज का समारोह उपाधिधारकों के लिए ऐतिहासिक है। यह उपाधि आपकी मेधा, प्रतिभा, लगन व परिश्रम का प्रतिफल है। साथ ही साथ इसमें आपके परिवार, गुरूजन एवं समाज का भी अहम योगदान है। आपसे कहना चाहूँगी कि आप व्यक्तिगत उत्थान व पारिवारिक दायित्वों के साथ-साथ अपने सामाजिक व राष्ट्रीय दायित्वों का निर्वहन करने हेतु सदैव तत्पर रहें। ज्ञान, प्रौद्योगिकी, कौशल एवं सूचना-संचार के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में परिवर्तित समय के साथ स्वयं में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रयासरत रहने की आवश्यकता है। हमें अपने सांस्कृतिक, मानवीय एवं नैतिक जीवन-मूल्यों के साथ विकास के पथ पर अनुगामी होना है। पुस्तकीय ज्ञानार्जन के साथ-साथ नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर बल प्रदान करें। मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार, एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अथक प्रयास से चलाये जा रहे ई-पीजी पाठशाला,

ई–ज्ञान सिंधु, शोध–गंगा, शोध–गंगोत्री जैसे वेबसाइटों का प्रयोग कर अपने ज्ञान के क्षितिज को विस्तार दें। नवाचारों व नवोन्मेशों के प्रति कटिबद्ध रहें। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी का प्रयोग करें। ''स्वयम्'' जैसे वेबसाइट पर उपलब्ध ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का अधिकतम लाभ उठायें। पर्यावरण–संरक्षण, जल–संरक्षण एवं ''स्वच्छ भारत मिशन'' सहित सरकार की विभिन्न जन–कल्याणकारी योजनाओं से जनता को लाभ पहुँचाने में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। आप पौधारोपण कर तथा उनका नियमित देखभाल कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी ध्यान दें। इस अवसर पर हमें शिक्षा के प्रयोजन तथा समाज व देश के जीवन में इसकी भूमिका के बारे में आत्म–अवलोकन भी करना चाहिए। तदनुरूप आचरण कर हम ''एक भारत, श्रेष्ठ भारत'' के स्वप्न को साकार करने में सफल होंगे। संवैधानिक मूल्यों, प्रतिमानों व दायित्वों का दृढ़ता से पालन करें। विनम्र रहें। साहसी बनें। विश्वास का विनिर्माण करें। अपने निर्णयों में सदैव न्यायपूर्ण, सही और ईमानदार बनें। आत्मविश्वासी बनें। ऐसा कर आप विश्व को जीत सकेंगे।

अपेक्षा है कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को युग के अनुरूप आधुनिक व विकसित समाज के साथ दक्ष एवं निपुण बनाने हेतु हुनर सिखाने में मिसाल कायम करेगा। मै चाहूँगी कि हमारे शिक्षक वैश्विक व राष्ट्रीय शैक्षणिक गतिविधियों से स्वयं को अनवरत जोड़ें ताकि अद्यतन ज्ञान–विज्ञान व शोध–अनुसंधान से पूर्णत: परिचित हो सकें। ज्ञान–विज्ञान–कला–शोध–कौशल–अनुसंधान के सभी क्षेत्रों में अपनी मौलिकता व श्रेष्ठता का परिचय देते हुए नयी उपलब्धियाँ हासिल करें। अपने विद्यार्थियों को अद्यतन ज्ञान से लाभान्वित करें व उनके सामाजिक सरोकार का दायरा बढ़ाने में मददगार साबित हों।

विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभा व कौशल को निखारने का निरन्तर प्रयास करते रहें। विश्वविद्यालयों की अनवरत कोशिश होनी चाहिए कि विद्यार्थी एक सु-संस्कृत, नैतिकवान, चरित्रवान, सामाजिक एवं कुशल नागरिक के रूप में विकसित हों। विश्वविद्यालयों को चरित्रवान एवं ईमानदार नागरिक तैयार करने होंगे। युग एवं वैश्विक मांग की दृष्टि से अध्यापन-पद्धति को परिष्कृत होना चाहिए, पाठ्यक्रम नियमित रूप से अद्यतन होना चाहिए।

यह विश्वविद्यालय स्थापना काल से उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर है। मैं विश्वविद्यालय के प्राधिकार क्षेत्र में मेडिकल कॉलेज की स्थापना करने के लिए भारत व राज्य सरकार की पहल की सराहना करती हूँ। विश्वविद्यालय परिसर में जनजातीय अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री जी के कर-कमलों द्वारा हो चुका है। आधारभूत संरचना का निर्माण कार्य जारी है। यह केन्द्र जनजातीय संस्कृति व विकास के विविध आयामों को जानने व समझने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। अनेक रोजगारोन्मुख व व्यावसायिक स्ववित्त-पोषित पाठ्यक्रमों के सफल संचालन एवं ससमय परीक्षाफल के प्रकाशन हेतु विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना करती हूँ। यहाँ का गाँधी-विनोबा-जयप्रकाश चिंतन केन्द्र राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

अन्त में, मैं एक बार पुनः उपाधिधारकों को हार्दिक शुभकामनायें देते हुए कहना चाहूँगी कि पूरी गति और वेग के साथ, विवेक और समझदारी के साथ आप अपना और समाज का विकास करें, यही हमारी मंगलकामना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने ज्ञान एवं कौशल से संबंधित क्षेत्र में दक्ष होकर उन्नति कर पूरे

विश्व में अपना, अपने परिवार का, अपने शिक्षण संस्थान का, राज्य का एवं राष्ट्र का नाम रौशन करेंगे।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!